Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.III/April; 12pp.1-4

प्रा. बाजीराव राजाराम शेलार

ISSN:-2230-7850

Research Papers

अज्ञेय के उपन्यासों में यथार्थ की परिकल्पना

डॉ. राजेंद्र पी. भोसले
ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज,आर्टस
पुसेगाव, जि. – सातारा

प्रा. बाजीराव राजाराम शेलार
गिरिस्थान आर्टस् ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज,
महाबलेश्वर जि. सातारा.

प्रस्तावना :–

प्रत्येक युग का यथार्थ किसी न किसी रूप में पूर्व युग के यथार्थ से अलग होता है । यथार्थ और सूक्ष्म सत्य का संबंध बहुत ही संकीर्ण है। यथार्थ बोध का संबंध युग के जीवन और उसकी आकांक्षाओं से होता है। यथार्थबोध से तात्पर्य है समसामयिक परिवेश के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जीवन को सक्रिय एवं समग्र रूप से जीना। कोई भी साहित्यिक कृति यथार्थबोध से कट नहीं सकती। यथार्थ भोगते हुए व्यक्ति का उसके पक्ष या विपक्ष में दृष्टिकोण बना रहता है। यथार्थबोध का अर्थ है जीवन को समग्रता में देखना। सामाजिक यथार्थ के चित्रण करनेवाले उपन्यासकार देशकाल और परिस्थितियों की गहराइयों मे गोता लगाते हैं, और सामाजिक जीवन की विडंबनाओं के चित्रण प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास के क्षेत्र में अज्ञेय का आगमन एक नए युग का आरंभसूचक है। गतिशील समाज की अनदेखी भाव भंगिमाओं को एक चित्रकार की सूक्ष्मता एवं गोपनीयता के साथ अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में उतार दिया है। उन्होंने आंतरिक जीवन के रहस्यों की खोज की है। आंतरिक जीवन के संचालन में काम भावना का ही प्रमुख हाथ रहता है। इसलिए अज्ञेय के उपन्यास वासनामय प्रेम कहानियॉ बन कर रह गए हैं। ''अज्ञेय के उपन्यास उनके चिंतन का रेखा – ग्राफ है। जीवन के आरंभ से लेकर मौत तक वह सोचता है – व्यक्ति की मुक्ति का मार्ग खोजता है। व्यक्तित्व और मूल्य की बात करता है– विशिष्ट और गुणात्मक जीवन चाहता है।''1 अज्ञेय मूलतः मानव – मन के आभ्यन्तर कथा – शिल्पि है।

अज्ञेय की रचनाएँ :

अज्ञेय की रचना की भूमिका पाश्चात्य जीवन दर्शन और विचार पद्धति से प्रभावित है। वस्तुतः यह सीमाओं के बंधनों को तोड़कर विश्व – मानव की संवेदनाओं को स्वरबद्ध करने का प्रयास मात्र है। शायद अज्ञेय ने भोगे हुए यथार्थ को इस परिप्रेक्ष्य में अनुभूत करना अधिक तर्कसंगत महसूस किया होगा। अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में नई पीढ़ियों के बुद्धिजीवियों के असंतोश और आक्रोश को शब्दबद्ध करने का प्रयास अवश्य किया है। उपन्यासकार ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नए युगबोध को रूपायित करने की कोशिश भी की है। उनके उपन्यासों में दिखाई पड़नेवाले पात्र, भारत के आम लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। अज्ञेय ने भोगे हुए यथार्थ का संबंध लेकर अपने पात्रों को स्वाभाविक सिद्ध करने का प्रयास किया। अज्ञेय ने अपने अनुभूत यथार्थ को 'शेखरः एक जीवनी' और कालांतर में 'नदी के द्वीप' तथा 'अपने – अपने अजनबी' में दृढता से व्यक्त किया। यह स्पष्ट है कि अज्ञेय की शक्ति – सामर्थ्य उनकी कल्पना और अनुभूति के विनियोजन में निहित है। जो उनका रचना का मूल आधार है।

अज्ञेय के उपन्यासों का कथ्य :

अज्ञेय के उपन्यासों में वैयक्तिकता का चित्रण अधिक है। वे संपूर्ण सामाजिक जीवन को उसके वास्तविक रूप में चित्रित करने की अपेक्षा एक व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में रहकर उसके सामाजिक जीवन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म छानबीन करना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। उनके तीनों उपन्यास भिन्न कथा विधियों के कथा लेखन की पद्धति से हिंदी में प्रतिमान स्थापित करते हैं। वे पात्रों के अंतर्संव्यों का यथार्थ विश्लेषण करने के लिए जीवन की अनुभूतियॉ जीवन से ही समेट लिया है। '' अनुभूति की विविध आयामों को, अनुभूतियों के जटिल संश्लिष्ट संबंधों को, बारीक से बारीक बोधों को या बोध के बारीक से बारीक स्तरों को अज्ञेय के उपन्यासों के कलात्मक माध्यम से उद्घाटित किया गया है।''2 'शेखरः एक जीवनी' में प्रयुक्त प्रविधियों के कुशल विनियोग के साथ अंतरालों के आयोजन से वे नदी के द्वीप में अतिरिक्त विशिष्टता अर्जित करते हैं। स्त्री–पुरूष संबंधो में नए समंजन की चेतना को प्रकट करने में उन्होंने अग्रगामिता का परिचय दिया है। परंपरित नैतिकता से आक्रांत व्यक्ति की मुक्ति उनके दो उपन्यासों का विषय है।

'अपने – अपने अजनबी' अपने कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से एकदम आधुनिक है। कहना चाहिए कि इसका कथानक बहुत सीमित है। यह प्रतिकात्मक होने के साथ – साथ दुखांत भी है। यह अस्तित्ववादी चेतना से अनुप्राणित औपन्यासिक धारा की शुरूआत है। '' अपने–अपने अजनबी'' के माध्यम से अज्ञेय का रचना कौशल अत्यंत प्रौढ़ हो जाता है। इसमें पात्रों के माध्यम से पूर्व और पश्चिम की मृत्यु संबंधी मान्यताओं पर विचार – विमर्श हुआ है।

Please cite this Article as : *प्रा. बाजीराव राजाराम शेलार,डॉ. राजेंद्र पी. भोसल , अज्ञेय के उपन्यासों में यथार्थ की परिकल्पना* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**

शेखरः एक जीवनी में यथार्थता

अज्ञेय ने अपने प्रथम उपन्यास 'शेखरः एक जीवनी' को धनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विजन को शब्दबद्ध करने का प्रयास रहा है। यह उपन्यास कथा – प्रधान न होकर विचार – प्रधान है। बालमनोविज्ञान के सिद्धातों का समावेश इस उपन्यास की एक खूबी है। एक जिज्ञासू शिशु के मन की गतिविधियों का वर्णन इधर हुआ है। माता – पिता और बहन के विचारों का असर शिशु मन पर भिन्न ढंग से पड़ता है। शेखर घृणा का शिकार बन जाता है। शेखर और शशि के प्रेम के वर्णन में कई विशेषताएँ है। शशि का पूरा जीवन शेखर को बनाने में व्यतीत होता है। उसका व्यापक प्रभाव शेखर पर पड़ता भी है। शेखर और बहन सरस्वती का प्रेम एक निराला प्रकरण या प्रसंग है। वह प्रेम आंतरिक होकर गहन बनता है। शेखर और शारदा का प्रेम प्रसंग भी उपन्यास का एक उल्लेखनीय प्रकरण है। शेखर और कुमार के प्रेम प्रसंग की व्याख्या – समीक्षकों ने अलग ढंग से की है । वह मानसिक धरातल पर जुड़े दो मित्रों का लगाव है।

प्रेम और वासना में आत्यंतिक नैकट्य होता है। फ्रायड़के अनुसार बिना वासना के प्रेम का अस्तित्व संभव नही। शेखर के संदर्भ में यह सिद्धांत शत – प्रतिशत सही प्रतीत होता है। विद्रोही दीखनेवाला शेखर दरअसल वासना अथवा यौनभाव की ओर अत्याधिक मात्रा में प्रवृत्त है। विद्रोही होना उसकी जीवन प्रणाली है, जो उसके अतृप्त यौन भाव की पूर्ति में सहायक होती है। जहॉ कहीं उसकी काम भावना बाधित होती है, वहॉ संभवतः और सहजतः वह विद्रोह कर उठता है। किंतु ध्यातव्य यह है कि और चाहे जिस किसी के विरूद्ध वह विद्रोह कर ले, किंतु अपने संपर्क में आनेवाली तमाम नारियों चाहे वह सरस्वती हो या शशि, शारदा हो अथवा शांति के प्रति वह घोर मैत्रीपूर्ण आचरण करता है। शेखर जहॉ शारदा की आँखें मूँद कर उसके रूखे केशों को सूँघता है वहॉ भी प्रकारान्तर से उसकी दमित यौन भावना ही तुष्ट होती है, न कि अहं भावना। शांति के कंठ की स्पर्श मात्र से ये यह संतुष्ट होता है।

प्रेम और वासना ही वह भूल संवेदना है जो शेखर के व्यक्तित्व को आंदोलित और रूपायित करती है। प्रणय ही वह मूल प्रवृत्ति है जो शेखर को विभिन्न धरातलोंसे गुजरने को अनुप्रेरित करती है। शेखर एक रोमैन्टिक विद्रोही है। मनुश्य की अंतश्चेतना में जीवन के प्रारंभ से ही भय, कामवासना एवं अहं का किस प्रकार का जन्म एवं विकास होता है इस उपन्यास में इसका यथार्थ चित्रण हुआ है।

नदी के द्वीप में यथार्थता :

अज्ञेय ने इस उपन्यास में प्रेम के माध्यम से सौंदर्य चिंतन को पुनः जाग्रत किया है। प्रेम कहानी होने के कारण इसमें प्रेम संबंधी एक नई अवधारणा का स्थापन हुआ है। प्रेम का एक नया सौदर्यशास्त्र विकसित हुआ है। ''नदी के द्वीप में विवाह साधना, जीवन में परिवार का सीमा तक महत्व, परिवार और व्यक्ति के संबंध, युद्ध और विज्ञान की नैतिकता, प्रेम, ईर्ष्या, मित्रता, सभ्यता इत्यादि जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया गया है और अज्ञेय ने अपनी अत्यंत स्वस्थ एवं भारतीय दृष्टि का परिचय दिया है।''3 'नदी के द्वीप' की मूलधारा रेखा और भुवन को लेकर आगे बढ़ती है। प्रथम परिचय के पश्चात् भुवन और रेखा निरंतर निकट आते हैं। अपनी चिर शारीरिक अतृप्ति को लिए हुए रेखा भुवन में अपने प्रति आकर्षण जगाती है। तुलियन झील पर वह भुवन के पुरूश को उत्तेजित करने में सफल हो जाती है। परिणाम स्वरूप रेखा एक सर्जन बीनाकार को अपने गर्भ में पालती है। फिर गर्भपात भी करवा लेती है।

रेखा लक्षित करती है कि भुवन कहीं गौरा की ओर प्रवृत्त है। रेखा उनके बीच में बाधा नहीं बनती। वह डॉ. रमेश चंद्र से जिसकी सहायता से भ्रूणहत्या करवाई थी विवाह कर लेती है। रेखा से मुक्त हो वैज्ञानिक भुवन कभी छोटी सी मुन्नी गौरा के साथ विवाह करता है। रेखा पत्र के द्वारा भुवन के लिए शुभकामनाएँ भेजती है। इस कथानक से यह स्पष्ट है कि 'नदी के द्वीप' में स्त्री–पुरूष संबंधो का विवरण है। इसकी प्रमुख समस्या प्रेम, यौन तृप्ति और विवाह है। 'नदी के द्वीप' का संपूर्ण स्वर आत्मपीड़ा और सेक्स पीड़ा से संबंधित है। उसके सभी पात्र केवल प्रणय प्रकरण रचते और सोचते हैं। आत्मपीड़ा का यह दर्शन अज्ञेय का प्रतिपाध है।

'नदी के द्वीप' में अज्ञेय के व्यक्तित्व की विसंगतियाँ रेखा और भुवन के चरित्रों से ग्लोरिफाई हुई है। रेखा के द्वारा अज्ञेय ने अपने विकृत व्यक्तिवाद, क्षणवाद और सेक्सवाद का भरपूर प्रचार किया है। सेक्स प्राप्ति के प्रयास की पीड़ा को लेखक ने आत्मपीड़ा से जोड़ दिया है। उपन्यास का संपूर्ण स्वर सेक्स पीड़ा से उत्पन्न आत्मपीड़ा से संबंधित है। अज्ञेय ने अपनी नायिका के प्रणय को आत्मपीड़ा और वेदना के द्वारा गहरा बनाने का प्रयास किया है।

अपने – अपने अजनबी में यथार्थता

इस उपन्यास में पूर्व और पश्चिम की मृत्यु – संबंधी मान्यताओं का खंडन – मंडन हुआ है। यह उपन्यास मृत्यु की भयावहता से आक्रांत है। मृत्यु के साक्षात्कार में जीवन दर्शन का विवेचन ही लेखक का मुख्य उद्देश्य है। इस उपन्यास से अज्ञेय की वैयक्तिक विशिष्टता एवं प्रायोगिक नव्यता का उद्घाटन हुआ है। ''मृत्यु साक्षात्कार एवं अजनबीपन के सवाल को उठाने के कारण इस उपन्यास को अस्तित्ववादी उपन्यास के घोषित किया गया है। हिंदी के प्रथम अस्तित्ववादी उपन्यास के रूप में घोषित किया गया है।''4 अज्ञेय के इस उपन्यास की कथा अत्यंत संक्षिप्त है। इसका कथानक तीन खंडो में विभक्त है। तीन खंडों में दो स्त्री पात्रों की अंतर्द्वद्वात्मक स्थिति का ही चित्रण है। वृद्धा सेल्मा और तरूणी योंके हिमाच्छादित पर्वत की अधित्यका में बने एक काठधदमें भीषण हिमापात के कारण दो महिने की लंबी अवधि के लिए कैद हो जाती है। सेल्मा वृद्ध होने के साथ ही साथ कैंसर व्याधि से पीड़ित होने के कारण कृछ चिड़चिड़ी तथा कंजूस प्रकृति का पात्र है। सेल्मा के साथ योके अपना समय व्यतीत करने के लिए बाध्य है। उपन्यास के दूसरे खंड में सेल्मा के पूर्व जीवन का चित्रण हुआ है। अंतिम खंडमें योके के जीवनांत का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में यान एकलोफ, पॉल फोटोग्राफर एवं जगन्नाथन आदि कुछ गौण पात्र भी है।

संपूर्ण उपन्यास मृत्यु के साक्षात्कार में जीवन – दर्शन का चित्रण है। यह दुखांत होकर भी जीवन के प्रति प्रेम की भावना को व्यक्त करनेवाला उपन्यास है। मृत्यु भय से जीनेवाली योके के, और उस भय से मुक्त होकर जीने को सेल्मा के, व्यक्तित्व संघटनों द्वारा किया गया है। वस्तुतः अधूरी अभिलाषाएँ ही मृत्यु के समय मानव के पास रहती है। मानवीय मन के मोहभंग, विवशता, निराशा आदि को इस उपन्यास में शब्दबद्ध किया गया है। ''प्रस्तुत उपन्यास में मानव जीवन के सुनिश्चित रूप में डालने और उसे अनुभूति के माध्यम से अर्थ प्रदान करनेवाली शक्ति मृत्यु से साक्षात्कार करने का प्रयत्न है।''5 संबंधो का अजनबीपन भी प्रस्तुत उपन्यास के कथ्य का केंद्रबिंदू बनता है। लेखक ने पश्चिम में मानव संबंधो में अजनबीपन का कारण 'हम' और 'मैं' को 'हम' का प्रतिरोध नहीं स्वीकारा। इसके अनुसार योके की दृष्टि पश्चिम की है और सेल्मा की पूर्व की। लेकिन बर्फीली कब्र में योके और बाढ़ में सेल्मा के आचरण की अस्तित्ववादी विश्लेषण से अच्छी तरह समाया सकता है।

लेखकीय निष्कर्ष यह है कि जीवन में वैकल्पिक वरण या स्वातंत्र्य कहीं नहीं है। मृत्यु जीवन का सबसे बड़ा अंतिम सत्य है। इस सत्य का अनुभव अज्ञेय ने स्वयं किया जिससे 'अपने – अपने अजनबी' जीवंत हो गया है। संक्षेप में कह सकते है कि अज्ञेय के तीनों उपन्यांस व्यक्ति मानस के अंतर्द्वंद्व को उद्घाटित करनेवाले हैं। व्यक्ति के आंतरिक तथा बाहय मनोभावों का यथार्थ चित्रण ही उनका प्रमुख उद्देश्य है। अज्ञेय के सभी उपन्यास मनुष्य को

Please cite this Article as : *प्रा. बाजीराव राजाराम शेलार, डॉ. राजेंद्र पी. भोसल , अज्ञेय के उपन्यासों में यथार्थ की परिकल्पना* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**

सहायता या मूल वृत्तियों के चित्रण एवं विश्लेषण पर ही आधारित है और ये मूल प्रवृत्तियॉ देशीय या विदेशीय न होकर सर्वव्यापी है।

निष्कर्श

हम इस निष्कर्ष पर पहुॅच सकते हैं की भोगे हुए विशिष्ट अनुभव ही व्यक्ति के लिए यथार्थ बनते हैं। इसलिए हर एक व्यक्ति का अपना अलग यथार्थ होता है। आज का युग अनिश्चय , अव्यवस्था एवं जटिलता का युग है। परिणामतः व्यक्ति के भीतर अनेक बहुमुखी व्यक्तित्व उभर आए हैं जिसके कारण उनमें अनवरतः संघर्ष चल रहा है। उसमें विज्ञान, दर्शन, शिक्षा जैसे अनेक तत्वों का योगदान रहा है। अज्ञेय के उपन्यासों की विशेषता है यथार्थ की परिकल्पना के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति संबंधों की जटिलता एवं आधुनिक जीवन की पहचान। अज्ञेय ने आधुनिक जीवन की जटिलताओं एवं संकुलताओं को अपने विस्तृत कलेवर में समेट लिया है। परंपरा का निषेध करनेवाले, वर्तमान के साथ सक्रिय संग्राम करनेवाले तथा भविष्य के प्रति शंकाकुल मानसिकता रखनेवाले आधुनिक त्रस्त व्यक्ति मन के रेशे–रेशे उतार रखने में ये उपन्यासकार सफल निकले हैं।

संदर्भ :

1. ब्रम्हदेव मिश्र – अज्ञेय और उनका उपन्यास संसार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1987, पृ. 9
2. रामदरश मिश्र – हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1968, पृ. 108
3. चंद्रकांत बांदिवडेकर – उपन्यास स्थिति और गति, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1977, पृ. 91
4. भारतभूषण अग्रवाल – हिंदी वार्शिकी 1962, पृ. 23
5. प्रो. शशिभूशण सिंहल – हिंदी उपन्यास यात्रा गाथा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.सं. 1988, पृ. 133

Please cite this Article as : *प्रा. बाजीराव राजाराम शेलार,डॉ. राजेंद्र पी. भोसल , अज्ञेय के उपन्यासों में यथार्थ की परिकल्पना* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**